है। जो केरल प्रान्त से दुगना है और हरियाणा प्रान्त से पौने-दो गुना है। इस क्षेत्र की आपने घोर उपेक्षा कर रखी है। हमारे क्षेत्र के 50 प्रतिशत भाग में तो हम रेडियो की खबरें भी नहीं सुन पाते, जयपुर की न्यूज नहीं पहुंच पाती, अजमेर की न्यूज नहीं पहुंच पाती, बीकानेर और सूरतगढ़ की न्यूज नहीं पहुंच पाती, यहां तक कि दिल्ली का रेडियो भी वे नहीं सुन पाते। जब 1965 में पाकिस्तान के साथ युद्ध हुआ और उसके बाद 1971 में युद्ध हुआ उस समय वहां की आवाज बहुत साफ सुनाई देती थी, कराची और लाहोर के रेडियो बहुत बुलंद आवाज में बोलते थे। आप हमारे मोरेल को बुस्ट करना चाहते हैं, आप कहते हैं कि हम देश के प्रहरी हैं--लेकिन हमारे लिए आप क्या कर रहे हैं? पांचवी पांच वर्षीय योजना में आप ने हमारे लिये प्रावधान किया, चौथी पांच वर्षीय योजना में किया, लेकिन 6ठी पंच वर्षीय योजना में मैंने देखा कि आपने हमारे लिये कोई प्रावधान नहीं किया है। मुझे इस बात का बड़ा दुख है, पता नहीं क्यों आप हमारी अवहेलना कर रहे हैं। यही अवहेलना आप ने उत्तर-पूर्वी क्षेत्र की की थी, जिसके नतीजे आज आप भुगत रहे हैं और अब आप जिस प्रकार से हमारे क्षेत्र की उपेक्षा कर रहे हैं उसके परिणाम भी आप को भुगतने पड़ेंगे। इस लिये मैं कहना चाहता हूं-हम भी सजग हैं, हमारी जनता भी सजग है, रेगिस्तानी क्षेत्र एक बहुत बड़ा क्षेत्र है, उस की जनसंख्या भी बढ़ रही है, 10 वर्ष के सेन्सस के अनुसार 45 परसेन्ट बढ़ी है, इस लिये इस क्षेत्र के बारे में विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

इसी तरह से आज राजस्थान के रेडियो स्टेशनज की यह स्थिति है कि हम जयपुर, जोधपुर, बीकानेर की न्यूज दिल्ली में सुनना चाहे तो नहीं सुन सकते हैं। वहां के स्टेशन इतने कमजोर हैं कि उन की आवाज यहां नहीं सुनाई पड़ती है। हम दिल्ली में बैठ कर अपने क्षेत्र में होने वाली घटनाओं की जानकारी लेना चाहें तो ले नहीं सकते हैं। यह स्थिति हम बरदास्त नहीं कर सकते हैं। आकाशवाणी की दृष्टि से हमारी घोर उपेक्षा की गई है, दूरदर्शन की दृष्टि से तो हम कहीं भी नहीं हैं, हमारा कोई स्थान ही नहीं है। जयपुर में आप ने अभी थोड़ी सी व्यवस्था की है, अजमेर के लिये भी आप ने कहा है। लेकिन जोधपुर भी एक बहुत महत्वपूर्ण स्थान है--इन सब के लिए दूरदर्शन की व्यवस्था होनी चाहिये।

अब थोड़ा सा दूरदर्शन के कार्यक्रमों के सम्बन्ध में कहना चाहता हूं। मैंने दूरदर्शन के कार्यक्रमों को देखा है--आप के दूरदर्शन और आकाशवाणी के कार्यक्रमों में 50 प्रतिशत समय तो मनोरंजन के कार्यक्रमों पर लग जाता है। इन कार्यक्रमों को थोड़ा एजूकेटिव वेल्यू देनी होगी, सामाजिक कार्यक्रमों को हाथ में लेना होगा, एक तरह से कंस्ट्रक्टिव रोल आपके कार्यक्रमों को प्ले करना चाहिये। डवेलपमेन्टल एक्टिविटीज की तरफ पूरा ध्यान देना चाहिये। जो फिल्में दूरदर्शन पर दिखलाई जाती हैं वे हिंसा को प्रोत्साहन देती हैं, घृणा को पैदा करती हैं। मेरी दृष्टि में इस प्रकार की फिल्मों को दूरदर्शन पर नहीं दिखाया जाना चाहिये। फिल्मों के सिलैक्शन में ज्यादा टाइम नहीं लगेगा, मेरा अनुरोध है मंत्री जी तथा डिप्टी मिनिस्टर महोदय स्वयं इन फिल्मों को देखें, क्योंकि आज जो कानून और व्यवस्था की स्थिति बिगड़ी हुई है, जो ला-लेस-नेस छाई हुई है, जो घृणा का वातावरण फैला हुआ है उस में इन फिल्मों का सक्रिय योग है...

MR. DEPUTY-SPEAKER: Mr. Jain you can continue tomorrow.

---

18 hrs.

PAPERS LAID ON THE TABLE --- *Contd.*

NOTIFICATION EXEMPTING CERTAIN ITEMS PRODUCED BY SMALL SCALE MANUFACTURERS FROM EXCSE DUTY

THE MINISTER OF INFORMATION AND BROADCASTING (SHRI VASANT SATHE): On behalf of Shri Sawai Singh Sisodia, I beg to

[Shri Vasant Sathe]

lay on the Table a copy each of Notification Nos. 62/81-Central Excise to 73/81-Central Excises [GSR 192(E) to 203 (E)] (Hindi and English versions) published in Gazette of India dated the 25th March, 1981 together with an explanatory memorandum regarding introduction of certain modifications in the excise duty exemption schemes for specified items manufactured by small scale manufacturers, issued under the Central Excise Rules, 1944. [*Placed in Library. See* No. LT-2194/81].

18.01 hrs.

HALF-AN-HOUR DISCUSSION

SPECIAL ATTENTION FOR DRINKING WATER DURING SIXTH PLAN

—प्रो. नर्मला कुमारी शक्तावत (चितोड़-गढ़): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, पानी मानव की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। यदि हम अपने देश के मानचित्र पर दृष्टि डालें, तो हमें पता लगेगा कि सबसे अधिक पानी की समस्या राजस्थान प्रान्त में है ।

मान्यवर, साढ़े तीन लाख वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ यह प्रान्त भयंकर पानी के अभाव से पीड़ित है। दुर्भाग्य से इस समय अकाल की भी स्थिति है । राजस्थान एक ऐसा प्रान्त है, जहां पर एक साल के बाद दूसरे साल अकाल पड़ता ही रहता है । इस अकाल को यदि हम इस शताब्दी का सब से अधिक भयंकर अकाल कहें, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी । इस समय फसल सूखी, तो सूखी, खड़े हुए जंगल सूख गये, नदियों, तालाबों और यहां तक कि कुओं तक का पानी सूख गया । ऐसी स्थिति में पीने के पानी की समस्या मानव के लिए एक भयंकर समस्या के रूप में सामने आई है । ऐसे तो सारे राजस्थान में पानी की भयंकर समस्या है परन्तु राजस्थान का जो पश्चिमी भाग है, वह बहुत अधिक पीने के पानी के अभाव से ग्रसित है । प्राचीन समय में एक यह कहावत थी कि मारवाड़ का व्यक्ति यानी पश्चिमी राजस्थान का व्यक्ति जीवन में तीन बार ही नहाता है, जन्म, वरण और मरण के समय यानी जन्म के समय, विवाह के समय और मृत्यु के बाद । यद्यपि सरकार ने इस उक्ति को झुठला दिया है फिर भी हमारा यह कहना है कि पश्चिमी राजस्थान में भयंकर पीने के पानी का अभाव है।

मान्यवर, मैं यह कहना चाहूंगी कि पश्चिमी राजस्थान का बाड़मेर, जैसलमेर और बीकानेर का जो इलाका है, वहां पर मीलों दूर जा जा कर पानी लाना पड़ता है, 40 किलोमीटर तक से पानी लाया जाता है और यहां तक कि ऐसे कई परिवार हैं जिन में सभी काम करने वाले व्यक्ति पानी लाने के लिए लगे रहते हैं । सरकार के द्वारा भी कई स्थानों पर टैंकरों से पानी पहुंचाया जाता है लेकिन टैंकरों से पहुचाये गये पानी की मात्रा बहुत कम होती है । इस के साथ ही साथ पानी इतनी गहराई पर मिलता है कि 80 मीटर और 130 मीटर तक तो सामान्य बात है लेकिन कहीं कहीं पर तो 200 मीटर तक की गहराई में भी पानी नहीं मिलता है और वहां पर खारा पानी उपलब्ध होता है ।

बीकानेर के बारे में मैं यह कहना चाहूंगी कि राजस्थान कैनाल से वहां के लोगों की पानी की समस्या का समाधान किया जा सकता है यदि हम लिफ्ट इरीगेशन के द्वारा जगह-जगह पर गांवों में पानी पहुंचाएं । मैं ने राजस्थान के पश्चिमी इलाके के बारे में अभी निवेदन किया है । राजस्थान का जो दक्षिणी भाग है, वह एक पहाड़ी इलाका है । वहां पर भी पानी की भयंकर समस्या है । खास तौर पर वहां का पानी भी दूषित है । उसको पीने से नाख रोग हो जाता है । उसमें ऐसे कीटाणु पाये जाते हैं जिस से चर्म रोग भी हो जाता है ।

राजस्थान का जो अर्द्ध रेगिस्तानी इलाका है उसके पानी में फ्लुराइड नाइट्रेट रसायन पाया जाता है । उस पानी के पीने से